Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

अनुवाद : सिद्धांत और प्रविधि

B.H.D.S.-183

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain* M.A. (Hindi), B.Ed.

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

अनुवाद : सिद्धांत और प्रविधि

Question Paper—June-2023 (Solved) 1
Question Paper—December-2022 (Solved) 1
Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved) 1
Sample Question Paper–1 (Solved) 1
Sample Question Paper–2 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
1.	अनुवाद : स्वरूप और आयाम	1
2.	अनुवाद के प्रकार और क्षेत्र	16
3.	अनुवाद प्रक्रिया, साधन और पुनरीक्षण	31
4.	साहित्यानुवाद : एक परिचय	48
5.	गद्य साहित्य का अनुवाद	66
6.	पद्य साहित्य का अनुवाद	82
7.	प्रशासन की भाषा और अनुवाद	94

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

8. पारिभाषिक शब्दावली : अवधारणा और अनुवाद 111

9. प्रशासनिक पत्राचार का अनुवाद 129

10. विभिन्न विषयों की प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली और अभिव्यक्तियां : अभ्यास 148

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

अनुवाद : सिद्धान्त और प्रविधि **B.H.D.S.-183**

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. अनुवाद के स्वरूप का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-7, प्रश्न 3

प्रश्न 2. मीडिया में अनुवाद के समय किन-किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है? बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-20, 'मीडिया और अनुवाद'

प्रश्न 3. काव्यानुवाद के उद्देश्य और अनुवाद की पद्धतियां का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-88, प्रश्न 5, पृष्ठ-92, प्रश्न 10

प्रश्न 4. प्रशासनिक हिंदी की सामान्य हिन्दी और साहित्यिक हिंदी से भिन्नता को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-105, प्रश्न 7

प्रश्न 5. सर्जनात्मक साहित्य और अनुवाद पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-20, 'सृजनात्मक साहित्य और अनुवाद', अध्याय-4, पृष्ठ-60, प्रश्न 9

प्रश्न 6. प्रशासनिक भाषा के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-95, 'प्रशासनिक भाषा का वैशिष्ट्य'

प्रश्न 7. प्रशासनिक कार्यों से सर्वागत होने वाले अनुवाद का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-98, 'प्रशासनिक कार्यों में अनुवाद की आवश्यकता'

प्रश्न 8. विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद की उपयोगिता पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-18, 'विविध क्षेत्रों में अनुवाद की उपयोगिता'

प्रश्न 9. पारिभाषिक शब्दावली के अर्थ और स्वरूप पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-111, 'परिचय', पारिभाषिक शब्दावली : अर्थ और स्वरूप'

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) छायानुवाद

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-22, अभ्यास प्रश्न 1 'छायानुवाद'

(ख) पुनःसृजन

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-17, 'अनुसृजन अथवा पुनःसृजन'

(ग) कथा साहित्य का अनुवाद

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-68, 'गद्य साहित्य का अनुवाद', पृष्ठ-69, 'गद्य साहित्य के अनुवाद की चुनौतियाँ'

(घ) अनुकूलन

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-117, 'अनुकूलन'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

अनुवाद : सिद्धान्त और प्रविधि

B.H.D.S.-183

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. अनुवाद के महत्त्व और स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'अनुवाद का स्वरूप' पृष्ठ-3, 'अनुवाद का महत्त्व'

प्रश्न 2. सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-20, 'सर्जनात्मक साहित्य और अनुवाद'

प्रश्न 3. भाषिक और भाषेतर कोश को सोदाहरण समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-32, 'अनुवाद के विभिन्न साधन'

प्रश्न 4. कथा साहित्य के अनुवाद की चुनौतियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-69, 'कथा साहित्य के अनुवाद की चुनौतियाँ'

प्रश्न 5. साहित्यिक अनुवाद के महत्त्व को समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-54, 'साहित्यिक अनुवाद का महत्त्व'

प्रश्न 6. काव्यानुवाद की कठिनाइयों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-90, प्रश्न 8

प्रश्न 7. प्रशासनिक हिन्दी की मूलभूत अपेक्षाओं को रेखांकित करते हुए इसमें अनुवाद की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-108, प्रश्न 10, पृष्ठ-106, प्रश्न 8

प्रश्न 8. पारिभाषिक शब्द का आशय बताते हुए पारिभाषिक शब्दावली के प्रकार का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-118, प्रश्न 1, पृष्ठ-119, प्रश्न 3

प्रश्न 9. वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के निर्माण के सिद्धांत पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-116, 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली निर्माण के सिद्धांत'

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) प्रशासनिक भाषा में संक्षिप्ताक्षर

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-95, 'संक्षिप्ताक्षर प्रयोग'

(ख) कार्यालय ज्ञापन

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-133, 'कार्यालय ज्ञापन'

(ग) प्रशासनिक भाषा

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-94, 'प्रशासन एवं उसकी भाषा : अभिप्राय और कार्य क्षेत्र'

(घ) कहानी का अनुवाद

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-73, 'कहानी'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

अनुवाद : सिद्धांत और प्रविधि

अनुवाद : स्वरूप और आयाम

1

परिचय

अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की 'वद्' धातु से हुई है। 'अनुवाद' का शाब्दिक अर्थ है–'पुन:कथन' अर्थात किसी कही गई बात को फिर से कहना। यह भी कहा जा सकता है कि एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में ज्यों-को-त्यों प्रकट करना ही अनुवाद है। अनुवाद एक साहित्यिक विधा है, पर वह मौलिक साहित्य रचना की कोटि में नहीं आ सकती। अनुवाद को मूल लेखन पर आधारित 'भाषांतर' कह सकते हैं।

अनुवाद में मूलत: किसी एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना बड़ा ही कठिन कार्य है, क्योंकि प्रत्येक भाषा का अपना स्वरूप होता है, उसकी अपनी निजी-ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य तथा अर्थमूलक विशेषताएं होती हैं। कभी-कभी स्रोत भाषा का कथ्य लक्ष्य भाषा में अपेक्षाकृत विस्तृत, कहीं संकुचित और कहीं भिन्न रूपी हो जाता है। अनुवाद मानव की मूलभूत एकता, व्यक्तिचेतना एवं विश्वचेतना के अद्वैत का प्रत्यक्ष प्रमाण है। विश्व संस्कृति के निर्माण कि प्रक्रिया में विचारों के आदान-प्रदान का योगदान रहा है और यह अनुवाद के माध्यम से ही संभव हो सका है। सामाजिक संदर्भ में अनुवाद व्यापार अनौपचारिक परिस्थितियों में होता है। इसका संदर्भ द्विभाषिकता की स्थिति से है। इसका सामान्य अर्थ है कि हम एक समय में दो भाषाओं का वैकल्पिक रूप से प्रयोग करते हैं अर्थात् हम एक भाषा (मातृभाषा) में सोचते है, परंतु उसे दूसरी भाषा में अभिव्यक्त करते है। इस स्थिति में अनुवाद प्रक्रिया का होना अनिवार्य है। अनुवाद कार्य के तीन सन्दर्भ हैं–समभाषिक, अन्यभाषिक और अन्तरसंकेतपरक। अनुवाद एक सांस्कृतिक सेतु का काम करता है। विश्व की विभिन्न संस्कृतियों को जानने व समझने में इसकी निश्चित रूप से भूमिका सिद्ध हो चुकी है। विश्व की सांस्कृतिक एकता में अनुवाद का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

अध्याय का विहंगावलोकन

अनुवाद का अर्थ एवं परिभाषा

अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ

'अनुवाद' शब्द संस्कृत का यौगिक शब्द है, जो 'अनु' उपसर्ग तथा 'वाद' के संयोग से बना है। संस्कृत के 'वद्' धातु में 'घञ्' प्रत्यय जोड़ देने पर भाववाचक संज्ञा में इसका परिवर्तित रूप है–'वाद'। 'वद्' धातु का अर्थ है 'बोलना या कहना' और 'वाद' का अर्थ हुआ 'कहने की क्रिया' या 'कही हुई बात'। 'अनु' उपसर्ग अनुवर्तिता के अर्थ में व्यवहृत होता है। 'वाद' में यह 'अनु' उपसर्ग जुड़कर बनने वाला शब्द 'अनुवाद' का अर्थ हुआ–प्राप्त कथन को पुन: कहना'। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि 'पुन: कथन' में अर्थ की पुनरावृत्ति होती है, शब्दों की नहीं।

आज के संदर्भ में अंग्रेजी के Translation पर्याय के समानांतर यदि अनुवाद शब्द को देखा जाए, तो इसका अर्थ होगा–एक भाषा में कहे गए कथन को दूसरी भाषा में कहना। अंग्रेजी के शब्द translation की व्युत्पत्ति लैटिन के शब्द translatio से हुई है, जिसका अर्थ होता है–पार ले जाना। translation शब्द trans तथा ferre से मिलकर बना है। इस प्रकार translation शब्द का भी अर्थ हुआ–एक भाषा के पाठ को दूसरी भाषा में ले जाना।

अनुवाद की परिभाषा

नाइडा के अनुसार अनुवाद का तात्पर्य है स्रोत-भाषा में व्यक्त सन्देश के लिए लक्ष्य-भाषा में निकटतम सहज समतुल्य सन्देश को प्रस्तुत करना। यह समतुल्यता पहले तो अर्थ के स्तर पर होती है फिर शैली के स्तर पर।

जॉन कनिंगटन–"लेखक ने जो कुछ कहा है, अनुवादक को उसके अनुवाद का प्रयत्न तो करना ही है, जिस ढंग से कहा, उसके निर्वाह का भी प्रयत्न करना चाहिए।"

www.neerajbooks.com

कैटफर्ड–"एक भाषा की पाठ्य सामग्री को दूसरी भाषा की समानार्थक पाठ्य सामग्री से प्रतिस्थापना ही अनुवाद है।"

1. मूल-भाषा (भाषा),
2. मूल भाषा का अर्थ (संदेश),
3. मूल भाषा की संरचना (प्रकृति)।

सैमुएल जॉनसन–''मूल भाषा की पाठ्य सामग्री के भावों की रक्षा करते हुए उसे दूसरी भाषा में बदल देना अनुवाद है।''

फॉरेस्टन–''एक भाषा की पाठ्य सामग्री के तत्त्वों को दूसरी भाषा में स्थानान्तरित कर देना अनुवाद कहलाता है। यह ध्यातव्य है कि हम तत्त्व या कथ्य को संरचना (रूप) से हमेशा अलग नहीं कर सकते हैं।''

हैलिडे–''अनुवाद एक सम्बन्ध है, जो दो या दो से अधिक पाठों के बीच होता है। ये पाठ समान स्थिति में समान प्रकार्य सम्पादित करते हैं।''

न्यूमार्क–''अनुवाद एक शिल्प है, जिसमें एक भाषा में व्यक्त सन्देश के स्थान पर दूसरी भाषा के उसी सन्देश को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है।''

देवेन्द्रनाथ शर्मा–''विचारों को एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपान्तरित करना अनुवाद है।''

डॉ. भोलानाथ तिवारी–''किसी भाषा में प्राप्त सामग्री को दूसरी भाषा में भाषान्तरण करना अनुवाद है। दूसरे शब्दों में, एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासम्भव और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास ही अनुवाद है।''

पट्टनायक–''अनुवाद वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा सार्थक अनुभव (अर्थपूर्ण सन्देश या सन्देश का अर्थ) को एक भाषा-समुदाय से दूसरी भाषा-समुदाय में सम्प्रेषित किया जाता है।''

विनोद गोदरे–''अनुवाद, स्रोत-भाषा में अभिव्यक्त विचार अथवा व्यक्त अथवा रचना अथवा सूचना साहित्य को यथासम्भव मूल भावना के समानान्तर बोध एवं संप्रेषण के धरातल पर लक्ष्य-भाषा में अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया है।''

रीतारानी पालीवाल–''स्रोत-भाषा में व्यक्त प्रतीक व्यवस्था को लक्ष्य-भाषा की सहज प्रतीक व्यवस्था में रूपान्तरित करने का कार्य अनुवाद है।''

दंगल झाल्टे–''स्रोत-भाषा के मूल पाठ के अर्थ को लक्ष्य-भाषा के परिनिष्ठित पाठ के रूप में रूपान्तरण करना अनुवाद है।''

बालेन्दु शेखर–''अनुवाद एक भाषा समुदाय के विचार और अनुभव सामग्री को दूसरी भाषा समुदाय की शब्दावली में लगभग यथावत् सम्प्रेषित करने की सोद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है।''

अनुवाद का स्वरूप

अनुवाद के स्वरूप को दो संदर्भों में देखा जाता है–व्यापक और सीमित। अनुवाद को व्यापक संदर्भ में प्रतीक सिद्धांत के रूप में देखा गया है और सीमित संदर्भ में अनुवाद एक भाषिक क्रिया माना जाता है अर्थात अनुवाद भाषांतरण है।

अनुवाद का व्यापक संदर्भ

अनुवाद के स्वरूप को दो संदर्भों में बाँटा जा सकता है–

1. अनुवाद का सीमित स्वरूप तथा
2. अनुवाद का व्यापक स्वरूप।

अनुवाद के व्यापक स्वरूप (प्रतीकांतरण संदर्भ) में अनुवाद को दो भिन्न प्रतीक व्यवस्थाओं के मध्य होने वाला 'अर्थ' का अंतरण माना जाता है। ये प्रतीकांतरण तीन वर्गों में बाँटे गए हैं–

1. अंत:भाषिक अनुवाद (अन्वयांतर),
2. अंतर-भाषिक (भाषांतर),
3. अंतर-प्रतीकात्मक अनुवाद (प्रतीकांतर)।

'अंत:भाषिक' का अर्थ है–एक ही भाषा के अंतर्गत अर्थात् अंत:भाषिक अनुवाद में हम एक भाषा के दो भिन्न प्रतीकों के मध्य अनुवाद करते हैं। उदाहरणार्थ, हिंदी की किसी कविता का अनुवाद हिंदी गद्य में करते हैं अथवा हिंदी की किसी कहानी को हिंदी कविता में बदलते हैं, तो उसे अंत:भाषिक अनुवाद कहा जाएगा। इसके विपरीत अंतर भाषिक अनुवाद में दो भिन्न-भिन्न भाषाओं के भिन्न-भिन्न प्रतीकों के बीच अनुवाद करते हैं। इसे अन्वयांतर भी कहते हैं। संस्कृत में लिखी टीकाएं इसका उदाहरण हैं।

अंतर-भाषिक अनुवाद में अनुवाद को न केवल स्रोत-भाषा में लक्ष्य-भाषा की संरचनाओं, उनकी प्रकृतियों से परिचित होना होता है, वरन् उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक परम्पराओं, धार्मिक विश्वासों, मान्यताओं आदि की सम्यक् जानकारी भी उसके लिए बहुत जरूरी है। अन्यथा वह अनुवाद के साथ न्याय नहीं कर पाएगा।

अंतर-प्रतीकात्मक अनुवाद में किसी भाषा की प्रतीक व्यवस्था से किसी अन्य भाषेत्तर प्रतीक व्यवस्था में अनुवाद किया जाता है। अंतर प्रतीकात्मक अनुवाद में प्रतीक-1 का संबंध तो भाषा से ही होता है, जबकि प्रतीक-2 का संबंध किसी दृश्य माध्यम से होता है। उदाहरण के लिए, अमृता प्रीतम के 'पिंजर' उपन्यास को हिंदी फिल्म 'पिंजर' में बदला जाना अंतर-प्रतीकात्मक अनुवाद है।

अनुवाद का सीमित संदर्भ

अनुवाद की साधारण परिभाषा के अंतर्गत पूर्व में कहा गया है कि अनुवाद में एक भाषा के निहित अर्थ को दूसरी भाषा में परिवर्तित किया जाता है और यही अनुवाद का सीमित स्वरूप है। सीमित स्वरूप (भाषांतरण संदर्भ) में अनुवाद को दो भाषाओं के मध्य होने वाला 'अर्थ' का अंतरण माना जाता है। इस सीमित स्वरूप में अनुवाद के दो आयाम होते हैं–

1. पाठधर्मी आयाम तथा
2. प्रभावधर्मी आयाम।

पाठधर्मी आयाम के अंतर्गत अनुवाद में स्रोत-भाषा पाठ केंद्र में रहता है, जो तकनीकी एवं सूचना प्रधान सामग्रियों पर लागू होता है, जबकि प्रभावधर्मी अनुवाद में स्रोत-भाषा पाठ की संरचना तथा बुनावट की अपेक्षा उस प्रभाव को पकड़ने की कोशिश की जाती है, जो स्रोत-भाषा के पाठकों पर पड़ा है।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

इस प्रकार का अनुवाद सृजनात्मक साहित्य और विशेषकर कविता के अनुवाद में लागू होता है।

अनुवाद का महत्त्व

आधुनिक युग में अनुवाद की महत्ता व उपादेयता को विश्वभर में स्वीकारा जा चुका है। वैदिक युग के 'पुन: कथन' से लेकर आज के 'ट्रांसलेशन' तक आते-आते अनुवाद अपने स्वरूप और अर्थ में बदलाव लाने के साथ-साथ अपने बहुमुखी व बहुआयामी प्रयोजन को सिद्ध कर चुका है। प्राचीन काल में 'स्वांत: सुखाय' माना जाने वाला अनुवाद– कर्म आज संगठित व्यवसाय का मुख्य आधार बन गया है। दूसरे शब्दों में कहें तो अनुवाद प्राचीन काल की व्यष्टि परिधि से निकलकर आधुनिक युग की समष्टि परिधि में समा गया है। आज विश्वभर में अनुवाद की आवश्यकता जीवन के हर क्षेत्र में किसी-न-किसी रूप में अवश्य महसूस की जा रही है। इस तरह अनुवाद आज के जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बन गया है।

शिक्षा और अनुवाद

शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का महत्त्व अपरिहार्य है। देश-विदेश के ज्ञान-विज्ञान से परिचय प्राप्त करने के लिए अनुवाद की जरूरत पड़ती है और पड़ती रहेगी। इसके साथ ही विभिन्न देशों और समाजों के प्राचीन ज्ञान (उन भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान जो अब बहुत प्रचलन में नहीं हैं) तक पहुंचने के लिए अनुवाद वाहक का कार्य करता है। प्राचीन संस्कृति, ग्रीक आदि लेखकों की कृतियों को अनुवाद के माध्यम से ही पढ़ते हैं। अनुवाद का महत्त्व शिक्षा माध्यम की दृष्टि से बहुत व्यापक है विशेष रूप से उन देशों में जहाँ शिक्षा एक से अधिक भाषाओं के माध्यम से दी जाती है। भारत में विभिन्न प्रादेशिक भाषाएं शिक्षा का माध्यम हैं। हिंदी-अंग्रेजी के अलावा ओडिया, बंगला, असमिया, तमिल, तेलुगु आदि के माध्यम से बच्चा स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक प्राप्त करता है। बहुभाषी समाज में शिक्षा की व्यवस्था में अनुवाद की जरूरत पड़ती है, क्योंकि इसके माध्यम से पाठ्य सामग्री का स्तर समानांतर रखा जा सकता है तथा सामग्री जल्दी तैयार की जा सकती है। भाषा शिक्षण में भी अनुवाद विशेष महत्व रखता है, जो भाषा छात्र को सीखनी है उसे छात्र की अपनी मातृभाषा के साथ तुलनात्मक रूप में रखते हुए दोनों भाषाओं के बीच अनुवाद कराया जाता है। इस प्रक्रिया में छात्र भाषा के नियमों को भली भाँति सीख लेता है और धीरे-धीरे उस भाषा को स्वतंत्र रूप से इस्तेमाल करने लगता है। अधिक प्रयास के बाद स्थिति यह आती है कि छात्र दूसरी भाषा को भी मातृभाषा के समान बोलने और लिखने लगता है।

पर्यटन और अनुवाद

पिछले कुछ समय में पर्यटन एक बड़े व्यवसाय के रूप में उभरा है। अलग-अलग देशों के जिज्ञासु लोग विभिन्न देशों और उनकी संस्कृतियों को जानने के लिए भ्रमण करते हैं। पर्यटन के क्षेत्र में बढ़ती हलचल के चलते अनुवाद का महत्व और अधिक बढ़ गया है। आज लगभग सभी महत्त्वपूर्ण भाषाओं में विभिन्न पर्यटन स्थलों के विषय में जानकारी उपलब्ध है। विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध सूचना पट्ट, ब्रोशर्स, पंफलेट, मार्गदर्शिका आदि की सहायता से विभिन्न भाषा-भाषी पर्यटक अपनी मूल भाषा अथवा अंग्रेजी आदि में सूचना प्राप्त कर पाते हैं।

प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद

स्वतंत्र भारत को प्रशासन व्यवस्था का ढाँचा ब्रिटिश राज से मिला है। अंग्रेजों के बनाए नियम-कानून आदि सभी अंग्रेजी में थे। साथ ही प्रशासनिक कार्य में लगे अधिकारी-कर्मचारी वर्ग को भी अंग्रेजी में ही काम करने की आदत थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जब हिंदी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया, तो प्रशासन के क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता पड़ी। इसके लिए व्यापक स्तर पर व्यवस्था की गई। हिंदी में शब्दावली निर्माण, अनुवादकों की भर्ती तथा अनुवाद कार्य के प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था की गई। सरकार द्वारा विभिन्न मंत्रालयों, कार्यालयों तथा विभागों से संबंधित कार्यविधि साहित्य का अनुवाद शुरू कराया गया।

हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किए जाने के बावजूद प्रावधान यह है कि अंग्रेजी को सह राजभाषा के रूप में तब तक उपयोग में लाया जा सकता है जब तक कि सभी कार्यालयों के अधिकारी व कर्मचारी हिंदी नहीं सीख लेते। ऐसी स्थिति में प्रशासनिक स्तर पर द्विभाषिक स्थिति चल रही है। द्विभाषिकता के कारण नए बनने वाले नियम-कानून तथा आदेश, परिपत्र, संधि, करार, रिपोर्ट आदि द्विभाषिक रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं। पहले अंग्रेजी में तैयार करके उनका हिंदी अनुवाद किया जाता है। इस तरह अनुवाद प्रशासनिक क्षेत्र की अनवरत प्रक्रिया बन गया है। प्रत्येक दस्तावेज द्विभाषिक तैयार होता है इसलिए उसका अनुवाद करना अपेक्षित होता है। सरकारी कार्यालयों के अतिरिक्त सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिमानों, निगमों, कंपनियों, बैकों आदि को भी अपने प्रशासनिक कार्यों में सरकारी भाषा नीति का पालन करना आवश्यक है, अत: वहाँ भी अनुवाद की प्रक्रिया निरंतर चलती है। केंद्र और राज्य सरकार के बीच प्रशासनिक कार्यों के लिए भी अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है, विशेष रूप से अहिंदी राज्यों के मामले में। प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद प्रमुख रूप से अंग्रेजी से हिंदी में होता है। आवश्यकतानुसार थोड़ा-बहुत अनुवाद हिंदी से अंग्रेजी में भी किया जाता है। इस क्षेत्र में अनुवाद का महत्व यही है कि वर्तमान परिस्थितियों में यह एक अनिवार्यता बना हुआ है।

जन-संचार माध्यमों में अनुवाद

तकनीकी आविष्कारों ने इक्कीसवीं शताब्दी के द्वार पर दस्तक दे रहे विश्व को जनसंचार माध्यमों के विलक्षण मायालोक में खड़ा कर दिया है। पत्रकारिता, विज्ञापन, आकाशवाणी, दूरदर्शन, चलचित्र, कम्प्यूटर, दूरभाष, कृत्रिम उपग्रहों और नव्यतम संचार तकनीकों ने मनुष्य को सूचनाओं से अधिकाधिक समृद्ध करने के साथ ही संसार की बहुमुखी प्रगति में अपनी नई भूमिका तय की है। जीवन की गति को प्रमाणित करने वाले सबसे जीवंत और कार्यशील साधन ये संचार माध्यम ही हैं। विज्ञान, वाणिज्य, उद्योग, शिक्षा, प्रशासन और आर्थिक गतिविधियों में सर्वत्र ही

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

संचार सक्रिय है। देश और काल की दूरियों को समाप्त करते हुए इन संचार माध्यमों ने सम्पूर्ण विश्व को एक-दूसरे के निकट पहुंचाने का कार्य किया है। संचार माध्यमों के अंतर्गत दोनों तरह के माध्यम आते हैं–प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया। संचार माध्यमों की कार्य प्रणाली में अनवाद का अपरिहार्य महत्त्व है। दुनिया के कोने-कोने से एकत्र सूचना को पाठकों, श्रोताओं और दर्शकों तक उनकी भाषा में पहुंचाने में अनुवाद ही माध्यम बनता है। समाचार एजेंसियों समाचार प्रस्तुत करती हैं। समाचार-पत्र, रेडियो और टेलीविजन उन्हें अपनी जरूरतों के अनुसार भाषांतरित कराते हैं। इन माध्यमों के अपने अनुशद विभाग होते हैं, जो बहुत त्वरित गति से अनुवाद प्रस्तुत करते हैं। समाचारों के अतिरिक्त सूचनाओं, विज्ञापनों, संदेशों आदि के अनुवाद भी प्रस्तुत किए आते हैं भारत जैसे बहुभाषी देश में संचार माध्यमों को विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं में समाचार तथा महत्त्वपूर्ण सूचनाओं का अनुवाद कराना पड़ता है। इन माध्यमों का तंत्र काफी कुछ हद तक अनुवाद पर आश्रित होता है। लिखित अनुवाद के अतिरिक्त अनेक कार्यक्रमों में रूपांतर आशु अनुवाद भी चलता है। उदाहरण के लिए, चुनाव के उपरांत परिणाम आते समय दूरदर्शन द्वारा प्रस्तुत चुनाव विश्लेषण में, विदेशी मेहमानों के समय उनके स्वागत कार्यक्रम को प्रस्तुत करते समय। इन माध्यमों पर होने वाले अनुवाद की विशेषता यह है कि इसमें स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की भूमिका समय-समय पर बदलती रहती है। कभी अंग्रेजी स्रोत भाषा होती है, तो कभी लक्ष्य भाषा। कभी- कभी यह अनुवाद एक से अधिक भाषाओं में साथ-साथ प्रस्तुत किया जाता है।

साहित्य और अनुवाद

साहित्य का उद्देश्य मनुष्य को बेहतर मनुष्य बनाना है और इस प्रक्रिया में विश्व साहित्य को शामिल करके विपुल साहित्य के अध्ययन से एक विश्व संस्कृति का निर्माण किया जा सकता है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय साहित्य के साथ फ्रांसीसी एवं रूसी साहित्य के अध्ययन का भी विशेष महत्व है। विश्व साहित्य पढ़कर दमनकारी शक्तियों से संघर्ष के सम्बन्ध में जानकारी मिली। उनके संघर्ष में अपने अनुभवों के मेल से नए साहित्य का उद्भव हुआ, जिसके द्वारा व्यापक जागरूकता के उदय के साथ साहित्य में भी विकास देखा गया। नाटक एवं उपन्यास के क्षेत्र में हुए परिवर्तनकारी कार्य महत्त्वपूर्ण रहे हैं। साहित्य की महान कृतियों के आधार पर बनी फिल्मों का इसमें विशेष योगदान है। विश्व साहित्य और तुलनात्मक साहित्य के माध्यम से किसी समाज की सोच की निर्माण पद्धति को अधिक भली-भांति समझा जा सकता है और लोग अपने समाज के सर्वांगीण विकास में योगदान दे पाते हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी और अनुवाद

सूचना क्रांति ने सूचना विश्व का निर्माण किया। विभिन्न तकनीकी उपकरणों के माध्यम से आज हम हर समय सूचनाओं से भरे रहते हैं। पूरे विश्व में व्यापक स्तर पर सूचनाओं के आदान-प्रदान से व्यापार, पर्यटन, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में नित नए शोध और ज्ञान के आयाम जुड़ रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी ने संपूर्ण विश्व को एक गांव में बदल दिया है। अनुवाद से विश्व में भाषिक विविधता के बावजूद भाषाओं को समझना आसान हो गया है।

अनुवाद कार्य की चुनौतियां

अनुवाद दो भाषाओं तथा दो संस्कृतियों के बीच सेतु का कार्य करता है। दो संस्कृतियों के बीच संवाद का यह कार्य महत्त्वपूर्ण होने के साथ चुनौतीपूर्ण भी है। अनुवाद कार्य को लगभग असंभव कहा जाता है और सर्जनात्मक साहित्य विशेषकर कविता के अनुवाद में यह कथन लगभग सत्य ही है। किंतु अनुवादक इस असंभव लगने वाले कार्य को अपनी समझ, निष्ठा और प्रतिभा से संभव बना पाते हैं। अनुवाद करते समय अनुवादक के समक्ष अनेक चुनौतियां होती हैं, जिनका सामना करते हुए उसे मूलभाषा और लक्ष्य भाषा दोनों के प्रति न्याय करने के साथ पाठ की मूल आत्मा को भी बचाना होता है। अनुवाद कार्य की चुनौतियां निम्नलिखित हैं–

- अनुवादक को दो भाषाओं के ज्ञान के साथ-साथ दोनों भाषाओं की संस्कृति का ज्ञान भी उतना ही होना चाहिए।
- अनुवाद में सहजता, स्पष्टता के साथ भाषा में प्रवाह होना चाहिए।
- अनुवादक को दो भाषाओं के ज्ञान के साथ दोनों भाषाओं प्रकृति की भी समझ होनी चाहिए।
- अनुवाद के लिए भाषा तथा व्यवहार की विभिन्न बारीकियों की समझ आवश्यक है, जैसे–नाते-रिश्तेदारी के शब्द, विभिन्न अभिव्यक्तियों, भाषिक प्रयुक्तियों, मुहावरे-लोकोक्तियों आदि की समझ।
- कोई भी पाठ जिस कालखंड में लिखा जाता है, किन्तु उसी कालखंड में उसका अनुवाद भी हो आवश्यक नहीं, किंतु अनुवादक को अनुवाद करते समय कालखंड को भी ध्यान में रखना होता है।
- सर्जनात्मक साहित्य हो या गैर-सर्जनात्मक साहित्य विशेष शैली में लिखा जाता है। अनुवादक को अनुवाद करते समय तथा पाठ के प्रति निष्ठा को बचाए रखने और उसके प्रभाव को बनाए रखने के लिए पाठ की शैली के प्रति भी संवेदनशील होना चाहिए।
- अनुवादक को अपनी क्षमता और सीमा दोनों को पहचानना भी आवश्यक है। केवल आर्थिक लाभ के लिए किसी भी पाठ का अनुवाद कर देना उचित नहीं है।
- अनुवादक को विषय विशेष में उपलब्ध अद्यतन ज्ञान से परिचित होना चाहिए।
- अनुवादक को विषय विशेष के अनुवाद में सहायक उपकरण, जैसे–कोश, पारिभाषिक शब्दावलियां आदि की सामग्री और उपलब्धता के क्षेत्रों और अद्यतन सामग्री की भी जानकारी होनी चाहिए।
- साहित्यानुवाद करने से पहले अनुवादक को अपनी पात्रता की जांच कर लेनी चाहिए।

www.neerajbooks.com